

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला

455



स्वोपज्ञपरिमला'ख्यव्याख्योपेता

श्रीमन्महेश्वरानन्दप्रणीता

महार्थमञ्जरी

'भारती' भाषाभाष्योपेता

डॉ० श्यामाकान्त द्विवेदी 'आनन्द'

एम०ए०, एम०एह० व्याकरणाचार्य

पी-एच०डी० डी०लिट्



चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन

वाराणसी

विषयानुक्रमणी

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
♦ महाप्रकाश गुरु की वन्दना	३	♦ आणव मल	४९
♦ गुरुतत्त्व की महिमा	८	♦ मायौय मल	४९
♦ अभिधान-अभिधेयवाद	१३	♦ कर्म मल	७९
♦ महाप्रकाशात्मा परमशिव का स्वरूप	१४	♦ आत्मा की समस्त प्राणियों में स्फुटता	५४
♦ विमर्श शक्ति और माया	१८	♦ प्रकाशरूप शिव द्वारा समस्त मलों का ध्वंस	५७
♦ विमर्श शक्तिसमवेत परमशिव	१९	♦ प्रकाश और कर्तृत्व का सामरस्य	६४
♦ माया का स्वरूप	१९	♦ सकल	६५
♦ विमर्श का स्वरूप	२०	♦ प्रलयाकल	६६
♦ प्रकाश-विमर्श	२१	♦ विज्ञानाकल	६६
♦ शिव एवं शक्ति का अभेद	२२	♦ विमर्श और विश्वविस्तार	६७
♦ शक्ति और विमर्श	२२	♦ विमर्श-स्वरूप	६८
♦ विमर्श शक्ति और स्वातन्त्र्य शक्ति	२२	♦ निगमन	७०
♦ विमर्श को अवस्थायें	२६	♦ स्वात्मविश्रान्ति	७१
♦ सांख्य का सत्कार्यवाद और आगमिक सर्वविमर्शवाद	२६	♦ परासंवित्, प्रकाश एवं विमर्श	७२
♦ आत्मा की विश्वमूलकता तथा उसकी स्वतःप्रामाणिकता	२७	♦ सत्, चित् एवं आनन्द का अन्तःसम्बन्ध	७४
♦ शिव की सार्वत्रिक स्फुरता	३१	♦ विमर्शोन्मेष और जगत्	७५
♦ शिवतत्त्व (या आत्मसत्ता) की अनिर्वचनीयता	३४	♦ शैवागम के छत्तीस तत्त्व	७७
♦ अनात्मोपासना की दिशा में साफल्यप्राप्ति के प्रति शंकास्पदता	३६	♦ विमर्श के दो पृथक्-पृथक् रूप	७८
♦ विधि-निषेध के नियम या सिद्धान्त	३९	♦ परमस्वच्छन्द शिव और उनकी शक्तियाँ	८०
♦ विधि-निषेध	४२	♦ शक्ति के विभिन्न रूप	८२
♦ आत्म-पर्यालोचना के अभाव के दुष्परिणाम	४२	♦ शक्ति का स्वरूप	८५
♦ शिव की शक्तियाँ और उनका पशुओं में संकोच	४८	♦ औन्मुख्य का स्वरूप	८७
		♦ शिव का स्वभाव	९०
		♦ आरम्भवाद एवं असत्कार्यवाद का खण्डन	९१

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
♦ सदाशिव और ईश्वर का स्वरूप	९१	♦ आवरणद्वय	१२२
♦ सदाशिव और ईश्वर का स्वरूप	९२	♦ महाभाया और मायाशक्ति	१२३
♦ सप्त प्रमाता	९३	♦ वेदान्तियों की माया-	
♦ भगवति चिति का संकोच—		सम्बन्धिवी दृष्टि	१२४
प्रमातृत्व	९४	♦ माया की शक्तियाँ	१२५
♦ सदाशिव तत्त्व	९६	♦ महाभाया	१२६
♦ शिवतत्त्व एवं विद्यातत्त्व के		♦ माया शक्ति का प्रभाव	१२६
विमर्श : ज्ञान की अवस्था	९७	♦ माया के विभिन्न लक्षण	१२६
♦ मन्त्रमहेश्वर और उनका विमर्श	९८	♦ भेदवाद और उसका प्रत्याख्यान	१२९
♦ सादाख्य तत्त्व	९९	♦ अद्वैतवाद की पुष्टि	१३०
♦ शिवतत्त्व का स्पन्दन	१०१	♦ अवस्थात्रय	१३०
♦ अहं और इदं की अनुभूति	१०१	♦ परमशिव का स्वरूप	१३०
♦ सत्ता एवं विकास की भूमिकाएँ	१०३	♦ महार्थमञ्जरीकार और विज्ञानभैरव	१३१
♦ शुद्ध अध्या : ५ तत्त्वों		♦ परमात्मा शिव का सर्वकर स्वरूप	१३२
का विकास	१०३	♦ शान्त ब्रह्मवाद का खण्डन	१३३
♦ प्रमेय एवं प्रमाता	१०३	♦ इच्छा-ज्ञान-क्रियासामञ्जस्यवाद	१३४
♦ सदाशिव एवं ईश्वर में भेद	१०५	♦ परमात्मा का कर्तृत्वादि व्यापार	१३४
♦ ज्ञाता, ज्ञेय एवं विद्या का स्वरूप	१०५	♦ आभासन, शक्ति, विमर्शन	१३५
♦ ज्ञान	१०७	♦ स्पन्दशास्त्र और परमात्मा	१३५
♦ सृष्टि = अवरोहणानुकूल क्रम	१०७	♦ परमात्मा शिव की शक्तियाँ	१३६
♦ सद्विद्या	१०८	♦ पूर्णता	१३७
♦ अहं इदम्	११२	♦ परमात्मा की पूर्णता	१३८
♦ शुद्धाध्या तत्त्व	११२	♦ ज्ञानों के विभिन्न स्तर	१३८
♦ संविदात्मा महेश्वर की शक्तियाँ	११२	♦ शुद्धाध्या के तत्त्वों का ज्ञान	१३८
♦ शुद्ध विद्या का स्वरूप	११३	♦ परमशिव की शक्तियाँ	१३९
♦ परापर दशा एवं शुद्ध विद्या	११५	♦ परमशिव का शक्तिपञ्चक	१४०
♦ सहज विद्या एवं शुद्ध विद्या के		♦ शक्ति का औन्मुख्य	१४०
भावाभाव	११५	♦ चित् शक्ति	१४१
♦ सहज विद्या की प्राप्ति के उपाय	११६	♦ सर्वचैतन्यवाद	१४१
♦ अहन्ता एवं इदन्ता	११७	♦ आनन्द शक्ति	१४२
♦ मोहनी 'मायाशक्ति' और उसका		♦ औन्मुख्य	१४२
स्वरूप	११७	♦ आनन्दशक्ति एवं औन्मुख्य	
♦ स्वातन्त्र्य शक्ति	१२१	में भेद	१४३
♦ मायातत्त्व	१२२	♦ इच्छाशक्ति	१४३

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
♦ ज्ञानशक्ति	१४४	♦ त्रिक दर्शन के अनुसार प्रकृति का स्वरूप	१८३
♦ क्रियाशक्ति	१४५	♦ सांख्य एवं त्रिक दर्शन में प्रकृति-विषयक धारणा में अन्तर	१८४
♦ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ का रहस्य	१४७	♦ त्रिक दर्शन के छत्तीस तत्त्व	१८४
♦ स्पन्द, नाद, एजन् एवं इच्छा शक्ति	१४९	♦ प्रकृति के पर्याय	१८५
♦ महात्रिपुरसुन्दरी और शक्तियाँ	१५०	♦ गुणत्रय की वृत्तियाँ	१८५
♦ प्रथम स्पन्द, स्पन्दन एवं ओम्	१५१	♦ सांख्यशास्त्र के तत्त्व	१८७
♦ एकोऽहं बहु स्याम् = प्रथम स्पन्द = आद्य इच्छा	१५२	♦ प्रकृति का पञ्चभूतात्मक स्थूल स्वरूप	१८७
♦ क्षुब्धता एवं अक्षुब्धता इच्छा शक्ति	१५३	♦ स्थूल महाभूतों की उत्पत्ति का क्रम	१८८
♦ इच्छाशक्ति के भेद	१५५	♦ त्रिक दर्शन का पुरुष	१८९
♦ सोम-सूर्य-अग्निरूपा शक्ति	१५५	♦ त्रिक दर्शन की प्रकृति	१८९
♦ ज्ञानशक्ति	१५६	♦ अन्तःकरण के व्यापार	१९५
♦ ज्ञानशक्ति का स्वरूप	१५६	♦ मन, बुद्धि और अहंकार	१९६
♦ आनन्द का बहिर्मुखत्व	१५८	♦ करणों की कार्य-प्रक्रिया	१९७
♦ शक्तिपञ्चक	१५९	♦ अन्तःकरण की कार्यप्रणाली	१९७
♦ भगवती के विभिन्न रूप	१६०	♦ ज्ञान की प्रक्रिया	१९८
♦ पञ्चकञ्चुक एवं पाश	१६३	♦ न्यायशास्त्र में ज्ञान की प्रक्रिया	१९९
♦ परमात्मा की पाँच शक्तियाँ	१६३	♦ विश्व के मूलभूत पदार्थ	१९९
♦ पशु के पाँच कञ्चुक	१६३	♦ पारमात्मिक विषयालोक और ज्ञानेन्द्रियाँ	२०१
♦ जीवरूप पशु के कञ्चुक	१६५	♦ ज्ञानेन्द्रियों के प्रकार	२०३
♦ पञ्चशक्ति एवं पञ्चकञ्चुक	१६५	♦ परमात्मा की कर्मेन्द्रियाँ और जीवों में गति-सञ्चार	२०३
♦ शम्भु की अभिनयात्मक पुरुषावस्था	१६६	♦ लोकत्रय के क्रीड़ाङ्गण के क्रीड़ा-कारी परमेश्वर का स्वरूप	२०५
♦ पुरुष और परमात्मा की एकरूपता	१७४	♦ पञ्चमहाभूत और पारमात्मिक माधुर्य—पारस्परिक अन्तःसम्बन्ध	२०७
♦ शिव एवं ऐन्द्रजालिक	१७६	♦ पञ्चभूतों और परमशिव के माधुर्य में अन्तर	२१०
♦ शाम्भवी शक्ति के अनेक रूप	१७७	♦ भगवान् का माधुर्य	२१०
♦ प्रकृति एवं शाम्भवी शक्ति में ऐकात्म्य	१८२	♦ सर्वसर्वात्मकतावाद	२११
♦ सांख्य और त्रिक दर्शन : भेदक तत्त्व	१८३		

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
♦ सर्वसामरस्यवाद	२१२	♦ मन्त्रेश्वर और मन्त्रमहेश्वर	
♦ शाम्भव शक्ति एवं विश्वोत्ता-		प्रमाताओं में भेद	२३६
सात्मक व्यापार—पारस्परिक		♦ प्रमाताओं की संख्या	२३६
अन्तःसम्बन्ध	२१३	♦ भुवन	२३८
♦ स्वातन्त्र्य शक्ति के रूपान्तर	२१५	♦ आनन्दवाद	२४१
♦ शक्तिवाद	२१६	♦ उन्मेष-निमेषवाद	२४१
♦ शक्ति के परिणाम	२१६	♦ षडध्व या अध्वषट्क	२४१
♦ स्वातन्त्र्य शक्ति का विलास	२१७	♦ शिव-शक्ति की अभिव्रता	२४४
♦ परिणामवाद	२१८	♦ विश्वचित्र एवं विश्वचित्रकार	२४५
♦ सप्तत्रिंशत्तत्त्व	२१८	♦ पारमात्मिक शक्ति की असीमता	२४६
♦ अध्वषट्क का स्वरूप	२२०	♦ परमशिव की निमेषोन्मेष नामक	
♦ अध्वषट्क	२२२	दोनों दशाओं में समान व्यापकता	
♦ शुद्धाध्वा	२२२	एवं विराट् प्रसार	२५१
♦ अशुद्धाध्वा	२२२	♦ शिव की व्यापकता एवं	
♦ अध्वषट्क एवं शुद्धाशुद्ध सृष्टि	२२३	अध्वप्रसार	२५२
♦ अध्वा के विभिन्न रूप	२२४	♦ विश्वोन्मेषावस्था	२५४
♦ मार्ग के प्रकार	२२५	♦ निमेषावस्था	२५४
♦ शैव और शक्तों में भेद	२२६	♦ वेदान्त का खण्डन	२५४
♦ काल के भेद	२२६	♦ ज्ञानकला एवं उसके द्वारा लोक-	
♦ कला का जन्म	२२६	त्रय की अभिव्यक्ति	२५५
♦ पञ्चकलायें और उनका स्वरूप	२२८	♦ भावाभाव—दोनों में संवित् का	
♦ तत्त्वों का विभाजन-विधान	२२८	प्रसार	२५८
♦ भुवनों के प्रकार	२२८	♦ बहुत्व में एकत्व का सूत्र	२६२
♦ परसंवित्	२३१	♦ शरीर में परमात्मा की व्यापकता	२६४
♦ पशुश्रेणों	२३२	♦ पूजा का तात्त्विक स्वरूप	२६७
♦ पशु के भेद	२३२	♦ पीठतत्त्व और उसका स्वरूप	२६८
♦ विद्येश्वरों के भेद	२३२	♦ प्राणमय कोश	२६८
♦ मन्त्रेश्वर	२३२	♦ पीठों की श्रेणियाँ	२६९
♦ मन्त्रमहेश्वर	२३३	♦ कामरूप पीठ	२७०
♦ शिवतत्त्व एवं शक्तितत्त्व	२३३	♦ पूर्णगिरि पीठ	२७०
♦ स्वामीगण	२३३	♦ उज्जयान पीठ	२७०
♦ सप्त प्रमाता एवं विद्येश्वर	२३४	♦ जालन्धर पीठ	२७१
♦ मन्त्रेश्वर वर्ग	२३४	♦ परमेश्वर की पूजन-प्रक्रिया	२७२
♦ मन्त्रेश्वर और मन्त्रमहेश्वर	२३५	♦ परमेश्वर के पूजन की प्रक्रिया	२७३

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
♦ जप का स्वरूप	२७५	♦ खेचरी मुद्रा और उसका स्वरूप	३०४
♦ ध्यान का स्वरूप	२७५	♦ वर्णक्रम	३०४
♦ योग का स्वरूप	२७५	♦ शाम्भव शिद्ध के लक्षण	३०५
♦ ध्यान-भावनात्मक समावेशात्मक स्वरूप	२७६	♦ संवित् स्वभाव	३०६
♦ जीवन्मुक्ति का स्वरूप	२७६	♦ परमशिव के कृत्यों में शक्तियों की अनुस्यूतता तथा उनकी संख्या	३०८
♦ अर्चना का रहस्य	२७७	♦ प्रथापञ्चक	३१२
♦ पाँच शक्तियाँ	२७८	♦ दस शक्तियाँ	३१२
♦ भासा शक्ति	२७८	♦ स्थितिक्रम	३१३
♦ वाह	२८०	♦ इन्द्रियों की बारह स्फुरतायें	३१४
♦ शरीररूपात्मक महापीठ	२८१	♦ युगनाथ	३१४
♦ पञ्चवाह	२८६	♦ संहति-क्रम	३१६
♦ उपासनाक्रम	२८७	♦ शक्तियों की स्थिति	३१७
♦ व्योमवामेश्वरी शक्ति	२८८	♦ अवस्थाचतुष्टय के युग्म	३१७
♦ खेचरी शक्ति	२८८	♦ विकल्पातीता भासा शक्ति का स्वरूप	३१८
♦ दिक्चरी शक्ति	२८८	♦ भासा शक्ति का स्वरूप	३२०
♦ गोचरी शक्ति	२८८	♦ प्रतिबिम्बवाद का खण्डन	३२२
♦ भूचरी शक्ति	२८८	♦ भासा शक्ति और उसका स्वरूप	३२४
♦ पारमेश्वरी शक्ति के वागात्मक रूप	२८९	♦ तिरोधान	३२५
♦ स्पन्दकारिका के अनुसार शक्तिचक्र	२८९	♦ अनुग्रह	३२५
♦ पतिभूमिका में अवस्थित शक्तियाँ	२९०	♦ सृष्टि से भासापर्यन्त सृजन	३२६
♦ शक्तिवर्ग की द्विमुखी प्रवृत्ति	२९१	♦ जड़ ब्रह्मवादियों का सिद्धान्त	३२६
♦ वाणियों का मूल स्वरूप	२९२	♦ पूजा एवं पूजा के सारभूत तत्त्व	३२८
♦ पीठतत्त्व	२९५	♦ यथार्थ पूजा का स्वरूप	३३२
♦ वृन्दचक्र का स्वरूप	२९५	♦ पूजा के दो स्वरूप	३३२
♦ वृन्दचक्र	३०२	♦ देवता का स्वरूप	३३२
♦ सिद्धों की संख्या	३०२	♦ सामान्य जनों की अपरा पूजा का स्वरूप	३३३
♦ मुद्राविज्ञान और उसका स्वरूप	३०२	♦ पूजा-विधि	३३३
♦ क्रोधनी मुद्रा का स्वरूप	३०३	♦ औपचारिक एवं यथार्थ पूजा में अन्तर	३३५
♦ भैरवी मुद्रा और उसका स्वरूप	३०३	♦ चिद्भूमि में विश्रान्ति ही पूजा	३३६
♦ लेलिहाना मुद्रा और उसका स्वरूप	३०४	♦ समयाचारियों का पूजा-विधान	३४१

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
♦ पञ्चविध साम्ब	३४२	♦ विद्या	३६५
♦ योगिनोद्बुद्धोक्त पूजा के प्रकार	३४२	♦ राग	३६५
♦ परा पूजा	३४२	♦ काल	३६६
♦ परापरा पूजा	३४३	♦ नियति	३६६
♦ अपरा पूजा	३४३	♦ प्रकृति	३६६
♦ सहस्रदल कमल की स्थिति	३४५	♦ मलत्रय	३६६
♦ त्रिपुरोपासना	३४८	♦ कञ्जुक	३६६
♦ प्राणायाम का यथार्थ स्वरूप	३४८	♦ आणव मल के प्रकार	३६७
♦ प्राणायाम	३५०	♦ स्वातन्त्र्यात्मा चित्ति शक्ति	३६७
♦ प्राणायाम के भेद	३५०	♦ भगवती संवित् का आत्मगोपन	
♦ प्राणायाम का फल	३५०	व्यापार	३६८
♦ प्राणायाम-साधना के फल	३५०	♦ संवित् शक्ति का अवरोहण क्रम	३६८
♦ शुद्धि के उपाय	३५५	♦ आरोहण के उपाय	३६८
♦ मलत्रय का उन्मूलन	३५६	♦ अनुपायतत्त्व	३६८
♦ शोष का स्वरूप	३५६	♦ अभिनवगुप्तपाद और अनुपाव	३७१
♦ दाह का स्वरूप	३५७	♦ उपायों का क्रम	३७२
♦ आप्लावन का स्वरूप	३५७	♦ बन्धन और मल	३७३
♦ मल का शोष और बुद्धि की आवश्यकता	३५८	♦ बन्धन का स्वरूप	३७३
♦ संसारंशुकरारण	३५९	♦ अज्ञान के दो रूप	३७४
♦ मल के विभिन्न स्वरूप एवं पक्ष	३५९	♦ मालिनीविजयोत्तरतन्त्र और समावेश	३७४
♦ मलों के प्रकार	३६०	♦ उपाय एवं समावेश	३७४
♦ परमशिव की दो अवस्थायें	३६१	♦ उपाय	३७५
♦ आत्मा की तीन अवस्थायें	३६२	♦ उपायचतुष्टय	३७५
♦ पशु	३६२	♦ साम्बोपाव का स्वरूप	३७५
♦ भेदप्रथा-प्रसविनी माया	३६३	♦ ज्ञान और मल : अन्तःसम्बन्ध	३७७
♦ मल	३६३	♦ शक्तिपात	३७७
♦ प्रलयाकल	३६३	♦ ज्ञान-श्रेणी और मलकल्पना	३७७
♦ विशानाकल	३६३	♦ उपाय और ज्ञानतत्त्व तथा मलशोष	३७८
♦ पाश	३६३	♦ परामर्श	३७९
♦ आणव मल	३६३	♦ ज्ञान	३७९
♦ मल के कारणभूत षट्कञ्जुओं का स्वरूप	३६५	♦ ज्ञान का सर्वाधिक महत्त्व	३७९
♦ कला	३६५	♦ इच्छात्मक उपाय	३८०

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
♦ शाक्तोपाय	३८१	♦ देवताविषयक बौद्ध मत	४१३
♦ आणवोपाय	३८३	♦ लयक्रम	४१३
♦ बन्धन का कारण	३८४	♦ मन्त्र के बीजाक्षरों से देवता का आविर्भाव	४१४
♦ मुक्ति और बन्धन (जैन दर्शन)	३८५	♦ बौद्ध कालचक्रयान और देव-मण्डल	४१४
♦ मुक्ति के साधन—जैन मार्ग	३८५	♦ स्कन्धों के अधिष्ठाता आदिबुद्ध	४१५
♦ मुक्ति के उपाय (स्पन्दकारिका)	३८५	♦ देवों के कुल	४१५
♦ स्पन्दात्मक आत्मबल की प्राप्ति	३८६	♦ पञ्चरक्षामण्डल	४१५
♦ शुद्धि के उपाय (योगसूत्र)	३८६	♦ जगत्त्रिंश और देवत्वबुद्धि	४१६
♦ शुद्धि के उपाय (महार्थमञ्जरी)	३८७	♦ देवताबुद्धि	४१८
♦ शुद्धि के उपाय (त्रिकदर्शन)	३८७	♦ मन्त्र के लक्षण एवं उनका यथार्थ स्वरूप	४१८
♦ शुद्धि के उपाय : दीघनिकाय	३८७	♦ मन्त्र का स्वरूप	४२०
♦ शुद्धि के उपाय : जैन दर्शन	३८७	♦ आत्मसत्ता के दो पक्ष एवं मन्त्रानु-सन्धान की दो अवस्थायें	४२०
♦ शुद्धि के उपाय : शांकर दर्शन	३८८	♦ मन्त्र के व्यापार	४२१
♦ पूजा-सामग्रियों के प्रतीकार्थ	३८८	♦ त्रिक दर्शन में विभवं का स्वरूप	४२१
♦ पूर्णाहन्ता के मुख में विश्वविकल्प का निक्षेप	३९५	♦ विमर्श का यथार्थ स्वरूप	४२३
♦ देवता का स्वस्वरूप	४००	♦ मन्त्र के लक्षण	४२३
♦ देवतातत्त्व और भावनायोग	४०३	♦ मन्त्र एवं शिव के साथ अभेदापत्ति	४२६
♦ देवता या भगवान् का यथार्थ स्वरूप	४०३	♦ मन्त्रों की स्वनिहित शक्ति की अपरिमेयता	४२६
♦ देवता के लक्षण	४०४	♦ मन्त्र : चित्तत्व की किरणें	४२८
♦ देवता का स्वभाव	४०४	♦ मन्त्रानुसन्धाताओं की दो अवस्थायें	४२९
♦ देवता और उपासक की आत्मा में सामरस्य	४०५	♦ विभवं	४२९
♦ आत्मोपासना पर बल	४०५	♦ संकोच	४२९
♦ देवोपासना में उपासक के भावों का प्रामुख्य	४०६	♦ वाक्चतुष्टय का स्वरूप	४३०
♦ योग का स्वरूप	४०६	♦ वैखरी वाक् का स्वरूप	४३२
♦ विश्व : परमात्मा का योगैश्वर्य	४०७	♦ मध्यमा वाक् का स्वरूप	४३३
♦ स्वात्मारूप संवित् तत्त्व ही देवता	४०७	♦ पश्यन्ती वाक् का स्वरूप	४३३
♦ तादात्म्यभावापन्न पूजा का फल	४०९	♦ सूक्ष्मा वाक् का स्वरूप	४३३
♦ देवता की उत्पत्ति	४१०		
♦ मन्त्र और देवता का तादात्म्य	४१२		
♦ देवता का आविर्भाव	४१३		

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
♦ परा वाक् का स्वरूप	४३४	♦ परा वाक् और परबोध	४५१
♦ वाक्चतुष्टय का मूल स्वरूप	४३६	♦ ज्ञानावतरण और वाक्त्व	४५२
♦ वाणियों के नामकरण का आधार	४३७	♦ देवाराधनोपयोगी सर्वोच्च मुद्रा का स्वरूप	४५३
♦ वाणी और त्रिपुरभैरवी में ऐकात्म्यभाव	४३८	♦ सर्वमुद्रात्मिका मुद्रा	४५५
♦ परा शक्ति का रूपान्तरण	४३८	♦ आत्मविमर्शरूप कल्पद्रुम का परिचय	४५८
♦ शक्ति और वाक्त्व	४३९	♦ आत्मविमर्शरूप कल्पद्रुम का स्वरूप	४६१
♦ नाद	४४१	♦ विमर्श कल्पद्रुम का स्वस्वरूप	४६१
♦ सर्वोच्च नाद ॐ का उच्चारण	४४१	♦ श्री एवं सुखोत्सव का स्वरूप	४६२
♦ द्वादश कलात्मक ॐ की मात्रायें	४४२	♦ कला के अर्थ	४६३
♦ द्वादश कलाओं में मात्रायें	४४२	♦ विमर्शकल्पद्रुम में विमर्श का स्वरूप	४६३
♦ नाद की चार अवस्थायें	४४२	♦ ब्रह्मद्वैतवाद का प्रत्याख्यान	४६४
♦ नादनवक के स्थान	४४२	♦ परमात्मा का कालातीत एवं मोक्षातीत स्वरूप	४६४
♦ वाणियों के नादात्मक रूप	४४२	♦ परमबिन्दु का आत्मविभाजन	४६९
♦ वाक्त्व का वंशवृक्ष	४४३	♦ काल के कारण बिन्दु का आत्मविभाजन	४७०
♦ वाणियों का यथार्थ मूल स्वरूप	४४३	♦ बिन्दु, नाद, बीज	४७१
♦ वैखरी वाक् और उसका स्वरूप	४४४	♦ भोग-मोक्षसाहचर्यवाद	४७३
♦ भगवती त्रिपुरमुन्दरी के विभिन्न लक्षण	४४४	♦ जीवन्मुक्ति का स्वरूप	४७३
♦ पञ्चदशाक्षरी विद्या	४४४	♦ शिवमार्ग में मोक्ष की दृष्टि	४७४
♦ वैखरी के भेद	४४५	♦ जगत् एवं वस्तुसत्य की अज्ञेयता	४७४
♦ क्रियाशक्ति और वैखरी	४४५	♦ परमशिव का प्रकाशक स्वरूप	४७८
♦ विराट् पुरुष एवं वैखरी वाक् का तादात्म्य	४४६	♦ प्रकाशस्वरूप परमशिव और उसका आनन्द	४७९
♦ मध्यमा वाक्	४४६	♦ आत्मा की स्थिरता	४८१
♦ वाणी के अन्य विभाजन	४४७	♦ आत्मा की आनन्दरूपता	४८२
♦ सप्तपदी विभाजन	४४७	♦ सर्वात्मवाद	४८५
♦ सृष्टि के आदि में प्रकट शब्द	४४७	♦ सर्वानन्दवाद	४८६
♦ महानाद के भेद	४४८	♦ आत्मा की सर्वानुस्यूतता	४८६
♦ मध्यमा वाक् के भेद	४५०	♦ सोऽहं मन्त्र और उसकी साधना	४८८
♦ स्थूल मध्यमा	४५०		
♦ सूक्ष्म मध्यमा	४५०		
♦ पर मध्यमा	४५०		
♦ मध्यमा का तात्त्विक मूल स्वरूप	४५१		

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
◆ सोऽहं साधना	४९१	◆ अजपा मन्त्र का ध्यान	५०६
◆ अजपा-जप के प्रकार	४९३	◆ अजपा मन्त्र का पुरश्चरण	५०६
◆ अजपा-जप की विशेषतायें	४९३	◆ अजपा-साधना से प्राप्त सिद्धियाँ	५०६
◆ मनुष्य की आत्मविस्मरणावस्था एवं श्वास-प्रश्वास	४९४	◆ अजपा मन्त्र एवं उसकी साधना	५०७
◆ अजपा-जप का स्वरूप	४९४	◆ योगियों एवं सन्तों की साधना में अजपा-जप	५०९
◆ 'हंसः' के हकार-सकार का क्रम	४९४	◆ अजपा जप एवं कुण्डलिनी	५११
◆ हंसः मन्त्र के क्रमविधान में मतभेद	४९४	◆ अधिकारभेदानुसार अजपा तत्त्व का स्वरूप	५११
◆ हंसः मन्त्र एवं सोऽहं मन्त्र	४९५	◆ अधिकारभेद से अजपा की साधना में भी भेद	५१२
◆ हंसः मन्त्र को सोऽहं में परिणति	४९५	◆ योगिसमाज में प्रचलित कुम्भकात्मक अजपा-पद्धति	५१३
◆ जीव का स्वाभाविक मन्त्र एवं स्वाभाविक जप	४९५	◆ औपनिषदिक हंसयोग या अजपा-साधना	५१३
◆ वायु का सुषुम्णा में प्रवेश और उसके प्रभाव	४९५	◆ अष्टदल कमल और वृत्तियाँ	५१६
◆ योगशास्त्र में वर्णित चित्तविक्षेप एवं श्वास-प्रश्वास	४९६	◆ अजपा-जपविषयक ध्यातव्य बिन्दु	५१७
◆ चित्तविक्षेपों के साथ होने वाले अन्य विक्षेप	४९६	◆ दर्शन की क्रिया	५१९
◆ अजपा-जपसम्बन्धी सिद्धान्त	४९७	◆ शिव और शक्ति का विरह	५१९
◆ देशगत गतिवैषम्य	४९८	◆ शिव-शक्ति के मिलन की अवस्था	५२०
◆ सिद्धान्त	४९८	◆ अजपा जपसम्बन्धी प्रयोग एवं अनुभव	५२०
◆ कालगत विषम गति	४९८	◆ विजयकृष्ण कुलदानन्द की अजपा-साधना	५२२
◆ सिद्धान्त	४९९	◆ श्वास-प्रश्वासात्मक नामजप का वैज्ञानिक रहस्य	५२३
◆ श्वासगति	४९९	◆ नामाराधन	५२४
◆ अजपा जप की पारम्परिक एवं साम्प्रदायिक विधियाँ	५००	◆ नामसाधना के कतिपय नियम	५२५
◆ समत्ववाद	५०१	◆ एक मास में सिद्धिप्राप्ति के उपाय	५२६
◆ श्वास की देशपरिक्षा	५०२	◆ सूफियों की साधना-पद्धति	५२७
◆ हंसः मन्त्र का स्वरूप	५०४	◆ बौद्ध ध्यानयोग	५२७
◆ सोऽहं और ॐ में अन्तःसम्बन्ध	५०४		
◆ अजपा-साधना की विधि	५०५		
◆ राघवभट्ट के अनुसार अजपा के न्यासादिक	५०५		

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
♦ प्रणवात्मक हंस	५३०	♦ योगियों का आनन्द और	
♦ अजपा-जपात्मक तान्त्रिक दृष्टि	५३३	आनन्दश्रेणियाँ	५७२
♦ विद्यात्मक परमशिव का विद्यातीत		♦ शतपथ ब्राह्मण के आनन्दों का	
स्वरूप	५३५	श्रेणी-वर्गीकरण	५७४
♦ उपाय और 'योरअरेसु' गाथा का		♦ आनन्द की चतुर्दश श्रेणियाँ	५७६
सम्बन्ध	५३८	♦ योगियों के आनन्द-स्तर	५७८
♦ जगत् और उमा तथा सूक्ष्म		♦ आनन्दश्रेणियाँ और चतुर्दशात्मक	
और स्थूल	५३९	सर्ग	५७९
♦ परमशिव के स्वरूपामृतपान का		♦ सर्ग-वर्गीकरण (सांख्यदर्शन)	५७९
अमित प्रभाव	५४०	♦ देवलोक और विदेह तथा	
♦ आणवत्व	५४४	प्रकृतिलव	५८०
♦ साक्तत्व	५४४	♦ आनन्दानुगता समाधि	५८०
♦ दर्पणरूप परमात्मा में प्रतिबिम्ब-		♦ विदेहावस्था एवं ब्रह्मलोकपर्यन्त	
स्वरूप जगत्	५४४	सूक्ष्म लोकों का आनन्द	५८१
♦ सौगत प्रतिबिम्बवाद का खण्डन	५५२	♦ योगियों के विषय-सौख्य और	
♦ स्वातन्त्र्यवाद	५५३	उनके द्वारा त्रैलोक्य-स्फुरण	५८१
♦ स्वातन्त्र्यवाद का स्वरूप	५५३	♦ सर्वानन्दवाद	५८२
♦ शिव की अवस्थायें	५५४	♦ स्वस्वरूपावस्थान और विवेक	५८३
♦ आभासवाद	५५६	♦ योग-भोगसाहचर्यात्मक	
♦ आभास का द्विपक्षात्मक स्वरूप	५५६	यामली सिद्धि	५८६
♦ प्रतिबिम्बवाद	५५६	♦ अमृतस्वभाव भाव की प्राप्ति	
♦ विश्व, अवभास एवं भैरवसंवित्	५५७	का फल	५९०
♦ योगी की अन्तर्मुखता	५५८	♦ गुरु के शक्तिपात की महिमा	५९४
♦ योगी और अस्थायीचतुष्टय	५६१	♦ दीक्षातत्त्व	५९७
♦ महासत्ता की स्थिति एवं		♦ चाक्षुषी दीक्षा	५९८
अवस्थायें	५६४	♦ आणवी दीक्षा	५९८
♦ अवस्थाओं के उपभेद	५६५	♦ शाक्ती दीक्षा	५९८
♦ तुर्यातीतावस्था	५६६	♦ शाम्भवी दीक्षा	५९८
♦ योगियों का योग-भोगसाहचर्यवाद	५६७	♦ बन्धन और मोक्ष	५९९
♦ स्वरूपानन्दोन्माद और योगी की		♦ देशिक और देशना	५९९
लोकोत्तरावस्था	५६९	♦ कटाक्ष	५९९
♦ उल्लोक	५६९	♦ मन्थानभैरवोक्त अमृतात्मिका	
♦ योगी की लोकयात्रा एवं सांसारिक		विद्या की सर्वोच्चता	६००
प्राणियों की लोकयात्रा में भेद	५७०	♦ आवागमनात्मक संसरण से मुक्ति	६०५

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
♦ हृदय	६०८	♦ कुरुक्षेत्र में उपदिष्ट महार्थ	
♦ उद्योग	६०९	का स्वरूप	६१९
♦ मलों के प्रकारत्रय	६११	♦ महार्थमञ्जरी के महार्थज्ञान एवं	
♦ बन्धन के कारण	६१२	भगवद्गीता के तत्त्वज्ञान में	
♦ मुक्त्यर्थ उपाय	६१२	सामञ्जस्य-प्रतिपादन	६२५
♦ समावेश	६१३	♦ मन्त्रों के अर्थ	६२६
♦ शक्तित्रय और मलत्रय	६१३	♦ महार्थतत्त्व	६२६
♦ मलों के आधार पर जीवविभाजन	६१४	♦ सोमानन्दपाद का सर्वशिववाद	६३०
♦ मलों के विधायक पञ्चकञ्जकु	६१५	♦ अर्थों के प्रकार	६३०
♦ चित् शक्ति की पञ्चकृत्यात्मक		♦ महार्थमञ्जरी का सारांश	६३१
आत्माभिव्यक्ति	६१५	♦ स्वप्न में उपदेश देने वाली सिद्धा	
♦ पञ्चकृत्यों का स्वभाव	६१५	योगिनी कालसङ्कर्षिणी को	
♦ कुम्भकार द्वारा घटनिर्माण		अभिवादन	६३१
के सोपान	६१५	♦ गाथानुक्रमणी	६४२-६४८